ISSN 0973-7790

Journal of Gender Equality and Sensitivity

(A Peer Reviewed Journal)

Volume : 12 NUMBER : 2 2017-18

Women's Studies Department
Barkatullah University
Hoshangabad Road, Bhopal-26(M.P)

Scanned by CamScanner

ISSN 0973-7790
Journal of Gender Equality and Sensitivity (2017-18) 12: 2:71-84

समकालीन महिला इतिहास लेखन में मौखिक इतिहास लेखन प्रविधि और संभावनाएँ

मनोज कुमार गुप्ता

सारांश

समाज का आधा हिस्सा होने के बावजूद महिलाओं की स्थिति और उनके अनुभवों को इतिहास के पन्नों में बहुत कम स्थान मिला है, जो वास्तव में विचार करने योग्य बात है। ऐसा नहीं कहा जा सकता कि, वे विकास की यात्रा में बिलकुल ही निष्क्रिय रही होंगी। यह भी ज्ञातव्य होना चाहिए कि अधिकतर परंपरागत इतिहास लेखन पुरुषों द्वारा ही किया गया। लगभग बीसवीं सदी के मध्य तक आते–आते दुनिया भर में इतिहास लेखन की कुछ नई पद्धतियाँ सामने आने लगीं, जिसमें एक मौखिक इतिहास भी है। जिनका उद्देश्य अतीत की पुर्नव्याख्या करना था, और साथ ही उन तथ्यों एवं बिंदुओं को संग्रहीत करना था जो मुख्य धारा के लिखित इतिहास में नजरअंदाज किए गए हैं। पुरानी पीढ़ी के इतिहासकारों के लिए यह एक चुनौती है – वे इसकी विश्वसनीयता पर सवाल खड़ा करते हैं। मौखिक इतिहासकारों का मानना है कि यह लिखित दस्तावेजों से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है। महिलाओं के इतिहास लेखन में मौखिक इतिहास का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। नारीवादी शोध प्रविधि में मौखिक इतिहास को शोध प्रविधि का एक हिस्सा माना जाता है। ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण के लिए वैधानिक आधार बन जाने के बावजूद मौखिक इतिहास अपने इतिहास निष्पादन में एक रचनात्मक तनाव का सामना करता है। इस शोध पत्र के जरिए महिला इतिहास लेखन में मौखिक इतिहास अनुसंधान विधि और उसकी समकालीन चुनौतियों का अध्ययन किया गया है।

प्रमुख शब्द : मौखिक इतिहास, महिला, अतीत, इतिहासकार, स्मृति, दस्तावेजीकरण, साक्षात्कार

Scanned by CamScanner

प्रस्तावना

अतीत एवं वर्तमान के बीच अविछिन्नता बनाये रखने के लिए ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है । इसकी सहायता से मानव जीवन से जुड़े विभिन्न पक्षों जैसे जाति, धर्म, लिंग, समाज, राजनीति एवं विज्ञान आदि के संबंध में व्यापक ज्ञान एवं दृष्टि का निर्माण होता है तथा इतिहास लेखन द्वारा यह प्रक्रिया निरंतर अग्रसर होती रहती है। इतिहास लेखन, अर्थात उपलब्ध तथ्यों का संकलन एवं उनका व्यवस्थित संपादन एक चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। इस चुनौतीपूर्ण कार्य में इतिहास चिंतन, इतिहास लेखन की प्रविधियों और दर्शन की अहम भूमिका होती है। इतिहास मानव समाज के क्रमिक विकास एवं मानव जीवन और उसकी जटिलताओं को समझने का ही नहीं बल्कि उसे बदलने का भी अनिवार्य उपकरण है। महान लेखक और राजनीतिज्ञ सिसरो ने इतिहास के बारे में कहा था कि "इतिहास समय के व्यतीत होने का साक्षी होता है, वह वास्तविकता को रोशन करता है, स्मृति को ताजा बनाता है, वह हमें प्राचीन काल की खबरें दे हमारे दैनिक जीवन में मार्गदर्शक का काम करता है।"[1] इतिहास की प्रयोगशाला में ही नवीन पथ का सृजन संभव है। इतिहास एक विषय ही नहीं अपितु अस्तित्व का बोध भी है।

इतिहास लेखन की परंपरा किसी न किसी रूप में सामाजिक विकास के साथ ही शुरू हुई है। सर चार्ल्स फर्थ लिखते हैं– "इतिहास मनुष्य के समाज में जीवन का, समाज में हुये परिवर्तनों का, समाज के कार्यों को निश्चित करने वाले विचारों का तथा उन भौतिक दशाओं का, जिन्होंने उसकी प्रगति में सहायता की, का लेखा जोखा है।"[2] इतिहास के संबंध में विद्वानों, चिंतकों, लेखकों की अलग–अलग धारणाएँ विद्यमान हैं। इन वैविध्यपूर्ण धारणाओं के पीछे कारणों का होना भी स्पष्ट प्रतीत होता है। वस्तुतः इतिहास की रचना या निर्माण विभिन्न कालखंडों एवं परिस्थितियों में अलग–अलग उद्देश्यों से हुई है, जिसके कारण इतिहास का स्वरूप समय–समय पर बदलता रहा है। इतिहास के व्यापक रूप को स्पष्ट करते हुए हेनरी जॉनसन लिखते हैं कि " इतिहास विस्तृत रूप में वह प्रत्येक घटना है जो कभी घटित हुई है।"[3] इसे और स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि विश्व में जीवों के संबंध में घटना को इतिहास की संज्ञा नहीं दी जा सकती। अर्थात यह मानव जीवन का ही वर्णन है।

Scanned by CamScanner

आधुनिक इतिहास लेखन में ऐतिहासिक तथ्यों की विवेकात्मक व्याख्या पर बल दिया जाने लगा। समान्यतः पुनर्जागरण काल से ही इसकी शुरुआत मानी जाती है। "18वीं और 19वीं सदी में एक आधुनिक अकादमिक विषय के रूप में इतिहास लेखन को मान्यता मिलनी प्रारम्भ हुई और पश्चिम के साथ–साथ पूर्वी देशों में भी विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और समुदायों के इतिहास पर शोध करने का काम शुरू हुआ।"[4] इतिहास लेखन में नवीनतम पद्धतियों को अपनाते हुए दस्तावेजों का वैज्ञानिक पद्धति से परीक्षण करना शुरू हो गया। इस दौरान मानसिक संकीर्णताओं और रूढ़ियों में कमी आने के साथ ही इतिहास लेखन में भी शोधवृत्त आने लगी। 20वीं सदी के मध्य तक इतिहास लेखन क्षेत्र में एक नवीन एवं व्यापक पद्धति के रूप में मौखिक इतिहास लेखन प्रविधि का विकास हुआ जो 21वीं सदी तक आते–आते उन लोगों के अतीत के दस्तावेजीकरण का प्रमुख माध्यम बना जो मुख्य धारा के लेखन में शामिल नहीं किए गए। जबकि ऐसा नहीं कि सामाजिक बदलाव में उनका योगदान न रहा हो या वे बदलाव की प्रक्रिया से प्रभावित न रहे हों। इसमें महिलाएँ भी शामिल थीं, इतिहास में इन्हें भी उचित स्थान नहीं मिला।

वर्तमान में वैश्विक स्तर पर मौखिक इतिहास लेखन को इतिहास लेखन की परंपरागत विधा से इतर एक नवाचारी पद्धति के रूप में अपनाया जा रहा है। खासतौर से यह प्रविधि उन तबकों के ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण हेतु अपनायी जाती है जो मुख्यधारा के इतिहास लेखन में महत्वहीन रहे। नारीवादी शोध प्रविधि के अंतर्गत मौखिक इतिहास लेखन प्रविधि को महिलाओं के अनुभवों एवं उनकी ऐतिहासिकता को पुनर्व्याख्यायित, पुनर्विश्लेषित और ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण का महत्त्वपूर्ण माध्यम माना जाता है। वस्तुतः यह परंपरागत रूढ़ियों, सत्ता संबंधों से बाहर आकर एक नए इतिहास की रचना का मार्ग प्रसस्त करता है और साथ ही इसे स्मृतियों के रूप में शेष रह गए महत्वपूर्ण तथ्यों को भी सहेजने तथा संग्रहीत करने के माध्यम के रूप में भी देखा जा रहा है।

उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य मौखिक इतिहास लेखन पद्धति की शोध प्रणाली और सैद्धांतिकी को जानने के साथ ही महिलाओं के इतिहास की पुर्नव्यवस्था और निर्माण में इस प्रविधि के महत्त्व और उसकी व्यापकता का अध्ययन करना है।

Scanned by CamScanner

प्रविधि

यह अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पुस्तकों, प्रकाशित शोध पत्रों एवं आलेखों आदि के आधार पर किया गया है।

मौखिक इतिहास

मौखिक इतिहास अतीत की विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पारंपरिक क्रियाकलापों और उन विशिष्ट लोगों के जीवन अनुभवों को संग्रहीत एवं पुनर्व्याख्यायित करना है जो अभी तक लिखित रूप में उपलब्ध नहीं हैं। वस्तुतः मौखिक इतिहास बहुत ही प्राचीन प्रक्रिया है भले ही इसे इतिहास लेखन की विधा के रूप में अभी स्वीकारा गया हो। लोकगीत, लोक कथाएँ, थेरीगाथा के साथ ही मुख्यतः हाशिये के समाज और लोगों का अपना अधिकांश इतिहास पीढ़ी दर पीढ़ी स्मृतियों के आधार पर संरक्षित किया जाता रहा है। मौखिक इतिहास की सीमाएँ बहुत ही विस्तृत हैं इसमें आधुनिक और पूर्व आधुनिक, विकसित और अविकसित संस्कृति, व्यक्ति तथा समूह के बीच और विषय तथा लेखक के बीच की सीमा रेखा को पार करते हुए प्राथमिक स्रोतों पर अधिक जोर दिया जाता है। यह परंपरागत रूढ़िवादी इतिहासकारों को स्वीकार नहीं है। अधिकांशतः वे यह मानते हैं कि जो लिखित नहीं है वो इतिहास ही नहीं है। हेगल की इस बात से उपर्युक्त कथन और भी स्पष्ट होता है। "1831 ई. में हेगल ने घोषणा की कि अफ्रीका विश्व का ऐतिहासिक भाग नहीं है।"[5] ऐसी ही कुछ प्रतिक्रियाएँ मुख्यधारा से जुड़े इतिहास वेत्ताओं द्वारा समय–समय पर आती रहीं। जबकि वास्तविक रूप में देखा जाये तो इतिहास लेखन प्रक्रिया में मौखिक स्रोतों का उपयोग वर्तमान समय में एक नवाचारी तकनीकी के रूप में देखी जा रही है। मौखिक इतिहास के महत्त्व के साथ ही इसकी प्रामाणिकता को अस्वीकार करने वाले लोगों के संदर्भ में पॉल थाम्प्सन अपनी पुस्तक ''द वॉयस ऑफ द पास्टरू ओरल हिस्ट्री'' (1978) में लिखते हैं कि "मौखिक इतिहास का विरोध भावना पर उतना ही आधारित है जितना सिद्धांत पर। पुरानी पीढ़ी के इतिहासकार जो ऊंचे पदों पर हैं और अनुदानों की झोली पर जिनका कब्जा है, वे सहज रूप से नई पद्धति के आगमन से आशंकित हैं। यह इंगित करता है वे अब अपने व्यवसाय की सभी तकनीकों पर अधिकार नहीं रखते

Scanned by CamScanner

हैं। इसलिए युवा व्यक्ति के प्रति इस तरह की अपमानजनक टिप्पणी करते हैं कि वह गलियों में टेप रेकार्डर लेकर टहलता रहता है।"[6]

मौखिक इतिहास लेखन का विकास

लोक विश्वास, मिथ, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परंपराएँ, लोक परंपराएँ एवं मुख्य धारा के इतिहास में गौड़ रहे लोगों जिनमें महिलाओं के जीवन अनुभव आदि स्मृति आधारित मौखिक स्रोतों के रूप में विद्यमान थे। इनका भी सामाजिक क्रियाकलाप में योगदान रहा क्योंकि यह भी उसका एक हिस्सा रहे हैं। मौखिक इतिहास लेखन का आविर्भाव इन्हीं स्रोतों को संरक्षित और संवर्धित कर एक नए और व्यापक अतीत के पुनर्निर्माण करने से था। उल्लेखनीय रूप से द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद का दौर मौखिक इतिहास के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक मान्यताओं में पूरी तरह से बदलाव का दौर था। इतिहास लेखन और इतिहास लेखन विधा दोनों समानांतर तरीके से प्रभावित हो रही थी। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पुनर्जागरण काल के दौर में स्मृतियों को एक प्रकार से ऐतिहासिक शोध हेतु महत्त्वपूर्ण स्रोत के रूप में माना जा रहा था। पॉल थामसन जैसे अन्य विचारक इस दौर को आधुनिक मौखिक इतिहास के शैशवकाल के रूप में मानते थे। प्राचीनकालीन इतिहास लेखन जो मुख्यतः प्रत्यक्षदर्शी तथ्यों एवं घटनाओं को ही इतिहास का हिस्सा मानता था, को इस नयी विधा के रूप में चुनौती मिलने लगी। वर्ष 1979 में एसैक्स, इंग्लैंड में मौखिक इतिहास विषय पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन'[7] को मौखिक इतिहास के विश्वव्यापीकरण में महत्वपूर्ण पड़ाव कहा जा सकता है।

मौखिक इतिहास नए अनुभवों के साथ एक नूतन अतीत और विस्तृत पटल पर मानवता की विशिष्टता से भी रूबरू कराता है। अल्लान नेविन्स जो एक जीवनी लेखक, इतिहासकार और साथ ही पत्रकार भी थे, ने इतिहास को और भी व्यापकता प्रदान करते हुए मौखिक इतिहास की संकल्पना दी। "वर्ष 1948 में अल्लान नेविन्स ने कोलंबिया यूनिवर्सिटी में पहला मौखिक इतिहास प्रोजेक्ट शुरू किया।"[8] मौखिक इतिहास लेखन न सिर्फ इतिहास विषय तक सीमित रहा बल्कि धीरे–धीरे सामाजिक इतिहास, महिलाओं के इतिहास और श्रमिक वर्ग के इतिहास लेखन के लिए मौखिक इतिहास लेखन पद्धति अपनाई जाने लगी। नारीवादी

Scanned by CamScanner

आंदोलन तथा महिलाओं के इतिहास का अभाव, स्मृतियों के रूप में बची रह गयी उन लोगों के जीवन अनुभवों को सहेजना, इतिहास में छूट गए तथ्यों के पुनर्निर्माण आदि ऐसे कुछ कतिपय कारणों से 60 के दशक से मौखिक इतिहास लेखन पद्धति अंतरराष्ट्रीय आंदोलन के रूप में तब्दील हो रही थी। तकनीकी विकास का जिसमें सबसे अहम योगदान था। "मौखिक इतिहास के विकास के इस दौर को दबे हुए इतिहास को जीवित करके समझने के माध्यम के रूप में देखा जा रहा है।" मौखिक इतिहास के विकास को इतिहास के प्रजातांत्रीकरण का भी श्रेय दिया जाता है।

21वीं सदी में मौखिक इतिहास लेखन प्रविधि को ऐतिहासिक शोधों में प्रमुखता मिलने के साथ ही अन्य सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी के विषयों विशेषकर अंतरानुशासनिक विषयों में हो रहे अनुसंधानों में शामिल किया जा रहा है। जाचेर्ट का मानना है कि मौखिक इतिहास अकादमिक पुस्तकलयाध्यक्षों के लिए शोध दक्षता तथा सामाजिक संबंधों को बढ़ाने के साथ ही ज्ञानार्जन की खाई को दूर कर सृजनात्मक बौद्धिक अनुदान करता है। टेप रेकार्डर, फैक्स मशीन, वीडियो रेकार्डिंग आदि नवीनतम तकनीकी के आगमन से इसे और भी मजबूती मिली है। मौखिक इतिहास को न सिर्फ अतीत का वर्णन मात्र कहा जा सकता है बल्कि यह वर्तमान माध्यमों से अतीत की पुनर्रचना भी है। इस प्रकार देखा जाए तो यह उन लोगों को बल प्रदान करता है जो इतिहास और इतिहास लेखन दोनों से बाहर रखे गए हैं। मौखिक इतिहासकार अतीत के वर्तमान गवाहों से अपेक्षा करते हैं कि वे उन घटनाओं और बदलाओं का विस्तृत वर्णन करें। आज कई स्तरों पर मौखिक इतिहास लेखन को प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

नारीवादी मौखिक इतिहास लेखन का समकालीन प्रयोजन

आत्मकथाएँ, संस्मरण, डायरी लेखन जैसे कार्य पहले से ही महिला आंदोलन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं। समकालीन नारीवादी शाधार्थियों की रुचि मौखिक स्रोतों के आधार पर महिलाओं के इतिहास लेखन की तरफ बढ़ने के कुछ कारण थे। 70 के दशक में नारीवादियों की सबसे बड़ी चिंता में महिलाओं के लिए एक सैद्धांतिक जमीन तैयार करना और साथ ही महिला प्रश्नों की प्रामाणिकता और एक नई ज्ञानमीमांसा के निर्माण जैसे कई मुद्दे शामिल थे।

Scanned by CamScanner

महिला मुद्दों के ऐतिहासिक दस्तावेजीकरण के लिए मौखिक इतिहास लेखन प्रविधि इसलिए भी बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह जीवन के लगभग सभी पक्षों को शामिल करता है। नारीवादी इतिहासकारों ने इसे एक शक्तिशाली और सुव्यवस्थित साधन के रूप में पाया है। नारीवादी इतिहासकारों को महिलाओं द्वारा प्राप्त साक्ष्यों और विवरणों से महिलाओं के विस्तृत अतीत एवं परंपरागत ऐतिहासिक दस्तावेजों पर दृष्टि डालने के साथ–साथ रूढ़िवादी ऐतिहासिक संकल्पनाओं को भी चुनौती देने का बेहतर विकल्प मिलता है । यह भी जानने और समझने का अवसर मिलता है कि, " जब कोई महिलाओं की आँखों से देखता है तब 'इतिहास' कैसा दिखता है? जब महिलाएँ महिलाओं से बात करती हैं, तब यह, विवरणों और साक्ष्यों में, किस प्रकार से विकसित होता है?"[9] मौखिक इतिहास के इस महत्त्व को देखते हुए नारीवादी ऐतिहासिक शोधों में मौखिक इतिहास लेखन प्रविधि का प्रयोग किया जाता है। मौखिक इतिहास के माध्यम से महिलाओं के निजी एवं सार्वजनिक जीवन के तमाम अनछुए पहलुओं और उन परिस्थितियों को भी जानने का अवसर मिलता है, जिन्हें महत्त्वहीन समझकर इतिहास के पन्नों पर दर्ज नहीं किया गया।

मौखिक इतिहास शोध उपकरण एवं प्रविधि

महिलाओं का इतिहास एक प्रकार से दबी हुई आवाजें हैं। महिलाओं की कहानियाँ उनके अपने जीवन अनुभवों के साथ ही उनसे संबंधित महिलाओं के अनुभवों से जोड़ती हैं। जूलिया स्विण्डेल्ल्स महिलाओं के मौखिक इतिहास में 'आवाज' और उनकी निजी जानकारी जैसे डायरी के बारे में सवाल करती हैं। वो कुछ इस प्रकार कहती हैं कि महिलाएं जो बातें खुद से करती हैं, तो क्या कोई उन बातों को शब्दसः बोल पाएगा? उनका विश्वास है कि वे आवाजें इतनी भोली और सीधी साधी होती हैं कि उन्हें विश्लेषित करना संभव नहीं होता। नारीवादी मौखिक इतिहासकार इस बात पर एक मत नहीं हो पाते हैं कि कौन और किस प्रकार की आवाजों को प्रस्तुत कर मौखिक इतिहास के रूप में प्रकाशित किया जाय–यह उत्पीड़न के स्वर हैं, कृतिम स्वर हैं, स्वयं को शांत न रख पाने के स्वर या मिले जुले स्वर हैं? मौखिक इतिहासकारों की अहम भूमिका मंद पड़ गयी या दब से गए स्वरों की प्रतिलिपि तैयार करना है।

Scanned by CamScanner

मौखिक इतिहासकार के पास कुछ शोध सहायक औजार पेंसिल, पेपर, पैड, टेप रेकार्डर आदि का होना आवश्यक होता है। ये परंपरागत साक्षात्कार से भिन्न होता है। मौखिक इतिहास में साक्षात्कार की योजना बहुत ही सावधानी पूर्वक बनायी जानी चाहिए। नारीवादी मौखिक इतिहासकारों का मानना है कि, मौखिक स्रोतों को संकलित करने वाला जरूरी नहीं कि एक शोधार्थी हो पर रिपोर्ट या वर्णन करने के समय एक विशेषज्ञ का होना आवश्यक है। समस्या के आधार पर मौखिक इतिहास प्राप्त करने के लिए शोधार्थियों के पास अलग–अलग माध्यम होते हैं। साक्षात्कार का उद्देश्य बहुत ही महत्त्वपूर्ण पहलू होता है।

सभी मौखिक इतिहास और जीवन इतिहास साक्षात्कारों के संदर्भ में यह नितांत आवश्यक है कि लिखित या मौखिक स्रोतों को अधिक से अधिक वैधता प्रादन करने के लिए पूरी सावधानी बरतनी चाहिए। अक्सर नारीवादी इतिहासकार प्राप्त अलग–अलग आवाजों को पहचानने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण संवादों और चर्चों साझा की गई कहानियों को माध्यम बनाते हैं। कुछ चरों के माध्यम से भी साक्षात्कार की तैयारी के क्रम में विषय संबंधित जानकारी जुटाई जा सकती है। प्रभावशाली या चर्चित लोग, कोई चर्चित घटना आदि हमें किसके बारे में जानना है यह महत्वपूर्ण होता है। कभी–कभी ऐसे भी साक्षात्कार करने पड़ते हैं जो बेहद ही निजी होते हैं ऐसे में मौखिक इतिहासकार को बहुत सावधानी और धैर्य की जरूरत होती है।

किसी भी महिला के जीवन अनुभवों एवं अतीत को जानने के लिए सबसे पहले शोधार्थी को उसका विश्वास पाना बहुत जरूरी होता है। मुख्यतः नारीवादी शोध प्रविधि में बहुत ही स्पष्ट है कि शोधकर्ता और शोध विषय में कोई शक्ति संरचना नहीं होनी चाहिए। साक्षात्कार दाता या शोध सहभागी का शोधकर्ता के साथ दोस्ताना संबंध हो वह अपनी बात कहने के लिए पूरी तरह सहजता महसूस करे। शोधार्थी में दुख, पीड़ा और भावनाओं के प्रति बहुत ही संवेदनशीलता होनी चाहिए। ऐसे स्थितियों में सावधानी पूर्वक प्रश्नों को रखना लेकिन साथ ही उसे किसी भी संबंधित प्रश्नों जैसे सेक्स, घरेलू कार्य, वैवाहिक जीवन आदि के लिए स्वतंत्रता का अनुभव करना चाहिए। स्त्री अध्ययन जैसे अकादमिक विषय में मौखिक इतिहास के लिए कोई निश्चित नियम नहीं बनाया गया है। यहाँ ऐसे तरीकों पर अधिक ध्यान

Scanned by CamScanner

दिया जाता है जिससे शोधार्थियों के लिए विस्तृत क्षेत्र के साथ अधिक खुला माहौल मिले।

मौखिक इतिहास प्रलेखन परियोजना का आयोजन

पहले ही स्पष्ट हो चुका है कि, मौखिक इतिहास अतीत के प्रेक्षकों और प्रतिभागियों से अतीत की घटनाओं के बारे में जानकारी एकत्र करना होता है। चूँकि मौखिक इतिहास स्मृति आधारित तथ्यों का संकलन होता है जो कि अतीत के तमाम अनछुए पहलुओं को जानने का व्यक्तिपरक साधन है। लेकिन व्यक्तिगत मानस और वर्तमान परिस्थितियों द्वारा इसमें बदलाव अथवा परिवर्तन की भी संभावनाएँ होती हैं । इन जटिलताओं और मौखिक इतिहास के महत्त्व को देखते हुए किसी भी मौखिक इतिहास शोध परियोजना की संपूर्णता और विश्वसनीयता बनाए रखने तथा शोध उद्देश्य की पूर्ति हेतु एक व्यवस्थित शोध रणनीति बनाना और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

मौखिक इतिहास आधारित शोध विषय के चुनाव की प्रक्रिया शोधार्थी के लिए सबसे पहला और महत्त्वपूर्ण चरण होता है। शोधार्थी को अपने शोध उद्देश्य को देखते हुए एक स्पष्ट दृष्टिकोण बना लेना शोध दृष्टि से आवश्यक होता है। विषय चयन के उपरांत शोधकर्ता को अपने परिवार, सगे संबंधियों, ऐतिहासिक समितियों एवं सामुदायिक संस्थाओं आदि के सदस्यों से अपने विषय पर चर्चा कर उन लोगों को जानने में सुविधा हो सकती है जो विषय से संबंधित हों और उन दृष्टांतों अथवा अनुभवों को साझा करने में रुचि रखते हैं। साक्षात्कार उम्मीदवारों की पहचान अथवा चयन मौखिक इतिहास आधारित शोध का सबसे चुनौतीपूर्ण और नितांत महत्त्वपूर्ण चरण होता है। साक्षात्कार की तारीख, समय और स्थान के निर्धारण में उम्मीदवार की सुविधा का पूरा ध्यान रखना चाहिए संभव हो तो साक्षात्कार हेतु सार्वजनिक स्थानों के चयन से बचना चाहिए।

मौखिक स्रोतों को दस्तावेज के रूप में संकलित करने की विधि शोध के संभावित परिणाम की प्रकृति पर निर्भर करती है। यदि डाक्यूमेंटरी बनानी है तो वार्तालाप सत्र की वीडियो रिकार्डिंग करनी चाहिए पावर पॉइंट आदि के लिए आडिओ रिकार्डिंग, छायाचित्र आदि के संकलन जैसी अलग–अलग विधियों को अपनाया

Scanned by CamScanner

जाता है। मौखिक स्रोतों के लिए साक्षात्कार की प्रक्रिया साधारण प्रश्नोत्तर सत्र के रूप में न होकर उम्मीदवारों के साथ विषय केंद्रित मुद्दों पर वार्तालाप अथवा बातचीत के जरिए किया जाना भी एक तरीका हो सकता है। यह भी ध्यान रखा जाता है कि उम्मीदवार को पूरी तरह सुविधापूर्ण माहौल मिले। शोधार्थी को अच्छे श्रोता के रूप में खुद को तैयार कर उम्मीदवार को आस्वस्त भी करना चाहिए कि वह उसकी कहानी में रुचि ले रहा है तथा उसके बातों की मौखिक प्रतिपुष्टि भी करते रहना चाहिए। इन कुछ कायदों का अनुसरण कर बेहतर परिणामों तक पहुंचा जा सकता है।

संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ

वर्तमान संदर्भो में मौखिक इतिहास ऐसे ऐतिहासिक प्रमाणों को पुनर्जीवित और दस्तावेजीकरण करने का माध्यम बना है जो मात्र स्मृतियों के रूप में बची रह गयी हैं। यह ऐसी विधि है जिसमें अतीत को वर्तमान में पुनः जीवंत कर एक नया साहित्य तैयार कर उसे पुनर्व्यख्यायित किया जाता है। वर्तमान में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कई संस्थान मौखिक इतिहास लेखन और मौखिक स्रोतों को संग्रहीत करने में अपना योगदान और प्रोत्साहन कर रहे हैं। नेहरू स्मारक पुस्तकालय एवं संग्रहालय जो भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय द्वारा संचालित होता है, ओरल हिस्ट्री एशोसिएशन, ओरल हिस्ट्री सोसाइटी आदि कुछ संस्थाएँ हैं जो इस दिशा में कार्यरत हैं। वर्तमान में अंतरानुशासनिक विषयों में हो रहे अनुसंधानों में मौखिक इतिहास लेखन को एक प्रविधि के रूप में शामिल किया जा रहा है। मुख्य रूप से महिला अध्ययन एवं जेंडर अध्ययन में हो रहे शोध कार्यों में मौखिक इतिहास का महत्त्व और भी बढ़ता जा रहा है। लगातार नवीन तकनीकी के प्रयोग से मौखिक स्रोतों को जुटाया जा रहा है जो भविष्य में शोधार्थियों और विश्लेषकों के लिए महत्त्वपूर्ण और उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। इसका सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू यह भी है कि, यह उन लोगों के भी जीवन अनुभवों और स्मृतियों को सहेजने की संभावना को बढ़ाता है जो शैक्षिक रूप से इतने सशक्त नहीं हैं कि, अपनी स्मृतियों को लिखित रूप में अगली पीढ़ी के लिए सुरक्षित रख सकें। महिला इतिहास लेखन में मौखिक इतिहास लेखन प्रविधि से प्राप्त दस्तावेजों से महिलाओं

Scanned by CamScanner

के अतीत के अनुभवों को जानने समझने के साथ ही पित सत्तात्मक सोच और विचारधारा से लिखे गए इतिहास को पुनर्विश्लेषित करने का आधार मिलेगा। मौखिक इतिहास लेखन प्रविधि से भविष्य में निष्पक्ष और विश्वनीय इतिहास के संरक्षण और संवर्धन की संभावना दिखती है ।

मौखिक इतिहास नवाचार और तकनीकी की उपलब्धि होने साथ ही इसके लिए अधिक धन की आवश्यकता होती है। जो शोधार्थी के लिए सबसे पहली चुनौती होती है । लगातार मुख्यधारा के इतिहास वेत्ताओं द्वारा मौखिक इतिहास की विश्वशनीयता को प्रश्नांकित किये जाते रहना भी इसी क्रम में शामिल है। महिलाओं का इतिहास लेखन और भी चुनौतीपूर्ण कार्य है क्योंकि उनके जीवन अनुभव और मनोभाव अन्य से बिल्कुल अलग हैं। इसके लिए एक शोधार्थी को बहुत ही धैर्य, संवेदनशीलता, और अंतर्विवेकशीलता के साथ काम करना होता है जो अपने आप में ही जटिल है। मौखिक इतिहास न सिर्फ साक्षात्कार या महिलाओं की कहानियों तक सीमित रह जाए बल्कि शोधार्थियों के सामने यह भी एक चुनौती है कि, इसके माध्यम से इतिहास लेखन की पूरी प्रक्रिया को समझकर विश्लेषित किया जाए। मौखिक परम्पराओं को ऐतिहासिक प्रमाण के रूप में समृद्ध करना भी मौखिक इतिहासकारों के हिस्से में आता है।

निष्कर्ष

मौखिक इतिहास प्राथमिक स्रोत का सबसे महत्त्वपूर्ण माध्यम है। अधिकतर आधुनिक विद्वानों का मानना है कि, यदि मौखिक इतिहास के लिए आयोजित साक्षात्कार को पूरी संवेदनशीलता और कर्तव्यनिष्ठा के साथ कार्य रूप में परिणित किया जाए तो यह निश्चित ही लिखित स्रोतों से भी महत्त्वपूर्ण और विश्वसनीय साबित हो सकता है। महिलाओं के इतिहास लेखन में मौखिक इतिहास के माध्यम से कई बार ऐसे जीवंत और अप्रत्यासित परिणाम आते हैं जो उनके अतीत की तमाम वास्तविकताओं का एक दृश्य प्रस्तुत कर देते हैं। मौखिक इतिहास स्थापित प्रतिमानों के निदर्शनात्मक परिवर्तन को प्रेरित करने का काम कर रहा है। यह महिलाओं को अपनी निजी जिंदगी के अनुभवो और सदियों से दबी आवाजों को सार्वजनिक करने की एक जमीन तैयार करता है जो महिला आंदोलन का प्रमुख

Scanned by CamScanner

उद्देश्य भी है। उपर्युक्त संदर्भों से स्पष्ट होता है कि, महिलाओं का मौखिक इतिहास उनके स्वयं के जीवन और आने वाली पीढ़ी को अपने वर्तमान की तमाम समस्याओं के हल तलाशने के लिए एक निष्पक्ष और बेहतर अतीत का दस्तावेज प्रस्तुत करने में सहायक हो सकता है । भविष्य में मौखिक इतिहास लेखन के माध्यम से एक नए अतीत की निष्पक्ष रचना संभव है।

संदर्भ

1 http://navbharattimes.indiatimes.com/opinion/editorial/-/articleshow/1020645.cms (06/02/2015; 8:32am)

2 खुराना, के. एल. – बंसल, आर. के. (2008). इतिहास–लेखन, धारणाएँ तथा पद्धतियाँ, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा. पृ. 3

3 खुराना, के. एल. – बंसल, आर. के. (2008). इतिहास–लेखन, धारणाएँ तथा पद्धतियाँ, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा. पृ. 2

4 https://guzarish-wordpress-com/2007/04/27/ इतिहास–निर्माण–और–राष्ट्–2 / (06/02/15 ; 11:24am)

5 एम.ए. नोट्स इकाई–11, स्थानीय इतिहास. पृ. 37

6 एम.ए. नोट्स इकाई–11, स्थानीय इतिहास. प . 38

7 Harrison, Barbara (edit.).(2008). Life story research, Vol.I ; Sage publication ltd. , page-75

8 Sobha ,I. & Reddy, M.S.N.(2009). Research methodology in women's studies, Anmol publications pvt.ltd, New Delhi

9 श्रीवास्तव, राजीव कुमार 'अनु.'.(2007). खामोशी के उस पार. वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली. पृ.–30

Scanned by CamScanner

संदर्भ ग्रंथ सूची

पुस्तक

खुराना, के. एल. बंसल, आर. के. 2008, *इतिहास–लेखन, धारणाएँ तथा पद्धतियाँ*, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा

Reinharz, S.1992. *Feminist Methods in Social Research*, Oxford university press, New York

कुमार, दीपक चौबे, देवेंद्र, 2011, *हाशिये का वृत्तांत*, आधार प्रकाशन, हरियाणा.

श्रीवास्तव, राजीव कुमार 'अनु', 2007, *खामोशी के उस पार*, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली.

सिंह, परमानंद, 2014, *इतिहास दर्शन*, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली

Sobha ,I. & Reddy, M.S.N.2009, *Research Methodology in Women's Studies*, Anmol publications pvt.ltd, New Delhi

आलेख

Bornat, Joanna. Oral history. (http://www.sagepub.in/upm-data/11490_04_Seale_Ch_02.pdf), access 5/02/15 ; 9:00 am

Chowdhury, Indira. Oral Traditions and Contemporary History Event, Memory, Experience and Representation (https://www.academia.edu/7846105 Oral_History_and_Oral_ Traditions)

Kalpagam, U. *Oral History: Reconstructing Women's Role*. EPW (September 20-27, 1986)

Oral History Methodology, The art of interviewing at University of California Santa Barbara, (http://www.history.ucsb.edu/

Scanned by CamScanner

faculty/marcuse/projects/oralhistory/199xDRussell UCSBOralHistoryWorkshop.pdf) access 6/02/15; 5:30 pm

Oral History: Methods for Documentation And Research ; Presented by Historical Society of Cecil County in partnership with Cecil County Public Schools (November 2005) (http://www.cecilhistory.org/aids/oralhistory.pdf)

Stephens, Julie. *Our Remembered selves: Oral history and feminist memory* (http://vuir.vu.edu.au/15542/1/Our_Remembered_Selves.pdf), access 2/02/15; 11:04pm

इंटरनेट

http://www.cecilhistory.org/aids/oralhistory.pdf

http://www.iohanet.org/resources/documents/Sean_Field_sephisoralhistoryinstructionpaper.pdf

Scanned by CamScanner